IJRAR.ORG E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मैथिली साहित्यमे दण्ड व्यवस्था: एक विश्लेषण

अम्बालिका कुमारी

शोधार्थी-(JRF)

विश्वविद्यालय मैथिली विभाग

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय

कामेश्वर नगर, दरभंगा

प्राचीन कालसँ दण्ड व्यवस्थाक उपयोग मनुष्य समाज पर होइत आबि रहल अछि। मनुष्यक उत्पतिक बाद जखन मनुष्यमे ज्ञानक विकास भेलै तखन ओकरा संग संग दुर्गुणक विकास सेहो भेलै। ओकरे नियंत्रित करबाक लेल नियम बनलैक आ दंडक विधान भेलै।

मैथिली साहित्यमे दण्ड व्यवस्थाक उल्लेख प्राचीन कालसँ धार्मिक एवं इतिहास ग्रंथमे देखबा मे अबैत अछि, जकर उपयोग महाभारत, मिथिला भाषा रामायण , कृष्ण चरित्र महाकाव्य , पतन खण्डकाव्य, शकुंतला महाकाव्य , चाणक्य महाकाव्य तथा चनरी कथासंग्रह आदिमे देखल जा सकैत अछि।

प्रारंभिक कालमे दण्ड व्यवस्था नहि छल। मुदा जेना -जेना मानवक विकास भेल, समाजमें प्रतिस्पर्धा विकसित भेलै, जोड़गर -कमजोर व्यक्तिक सँग दुर्व्यवहार करय लागलै, एकर आवश्यकताक अनुभव कयल जाय लगल । ओकरा रोकबा वा ओहि पर नियंत्रण करबाक हेतु न्याय व्यवस्था आरम्भ भेल। जे बलिष्ठ छल से राजा बनल आ अपन साम्राज्य स्थापित कयलक। जहियासँ राज्य आ राजाक उत्पति भेल, अपन प्रभुत्व स्थापित करबाक लेल जे हथकंडा अपनौलक ओ दंडक छल।

"न राज्य न च राजसीत न दण्डो न च दण्डिक:।
स्वयंमेव प्रजा:सर्वा रक्षन्ति स्म परस्परम।। "1

ओहिक माध्यम सँ समाजकें नीक मार्गपर अनबाक लेल आ समाजकें नियंत्रित करबाक लेल, दोषी कें सजा वा न्याय देबाक लेल दण्ड व्यवस्थाक प्रवधान कयल गेल। जखन मनुष्य धर्म -पथसँ भटकि कोनो अनुचित कार्यमें लीन भ जाइत छल वा क' लैत छल तँ ओकरा दण्ड देल जाइत छल। ई कानून सभपर समान रूप सँ लागू होइत छल। एकर नियंत्रता राजेक हाथमे होइत छलाह आ ओहि नियमकें पालन सभ कें समान रूप सँ कर पडैत छलै। ओकर उल्लंघन कयलासँ ओकरा दण्ड भोगय पडैत छलै। ई दण्ड व्यवस्था समाज, राष्ट्रक उन्नतिक मार्गपर चलबाक लेल महत्वपूर्ण कुंजी छल। ई प्रथा मनुष्यकें जन्मकालसँ आदर्श आ मर्यादित बनेबाक लेल सेहो लागू होइत छल। जखन लोक आदर्श आ मर्यादित रहताह तखने समाज आ राष्ट्रक विकास संभव होयत। ई नियम प्राचीनकाल, मध्यकाल आ आधुनिकालक लेल अति आवश्यक अछि। बिना कोनो नियमक

जीवन अमर्यादित आ पशु समान भए जाइत अछि। तँ ई दण्ड व्यवस्था मनुष्य जीवनकें नियंत्रित करबाक लेल सार्थक एवं आवश्यक अछि। मुदा ई दण्ड व्यवस्था सार्थकें नहि निरर्थको भ जाइत अछि, जखन कोनो निर्दोष व्यक्तिकँ सजा भ जाइत अछि। तखन ओकर जीवन मृत समान भ जाइत अछि। तकर कतेको उदाहरण अछि। जे समाज मे देखल जा सकैत अछि। साहित्य मे ताकल जा सकैत अछि।

पतनः- खंडकाव्य जहिमे दण्ड व्यवस्थाक वर्णन भेल अछि। जखन राजा इंद्र द्वारा वृति आ त्रिसराकें अनुचित रुपे हत्या भेलासँ गुप्त रुपे आत्म गलानीसँ निवारण हेतु तपस्या करबाक लेल चलि जाइत छथि। इंद्रक अनुपस्थितमे पृथ्वीक पराक्रमी राजा नहुषकँ स्वर्गक राजा बनाओल गेल।

"किन्तु स्वर्गक राज्य पाबि राजा शीचीकँ अपन स्त्री बनएबाक चाहलक। तँ शची सुर-गुरु बृहस्पतिक शरणमे गेलीह। बृहस्पति नहुषकँ कतबो बुझाओल ओ नहि मानल तखन देवता ओ बृहस्पतिक विचारेँ शची किछु अवधिक समय मागि उपश्रुति देवीक आराधना कयल एवं हुनक कृपासँ हिनका अपन स्वमी इंद्रसँ भेट भेलनि।"2

शची जखन अपन स्वामीसँ विचार विमर्श करैत अछि। आ शची छलपूर्वक नहुषकँ ऋषियान पर चढिक एबाक लेल कहैत अछि, जे आहाँके हमरा पयबाक अछि। तँ एहिपर चढ़ीक आबू। नहुष कामवासनमे वशी भुत भए अगस्त ऋषिके लात मारिक अगस्तयान के उपर चढि कऽ अबैत अछि। अगस्त ऋषि क्रोधित भऽ कऽ नहुषके सर्प बनबाक श्राप दय देत छथि। नहुष सर्प बनि धरती लोक पर खसैत अछि। एहि तरहे नहुषकें स्वर्गसँ पतन भए जाइत अछि आ ओ अजगर बनिक धरती पर खसैत अछि। एहि तरहे नहुषके शचीक प्रति दुर्द व्यवहारक करणेँ दण्ड भेटैत अछि ई दण्ड व्यवस्था प्राचीन कालसँ चलि आबि रहल अछि।

उतराः- खंडकाव्य जे सुरेन्द्र झा सुमन द्वरा रचित अछि, जे सात स्वर्ग मे विभाजित अछि।एहि खंडकाव्यमे दुटा दण्डक मुख्य रुपसँ वर्णन भेल अछि पहिल अछि जखन पांडव घूरतक्रीड़ामे खेलाइत अछि आ ओहिमे हारि जाइत छथि। आ हुनका दण्ड स्वरूप बारह वर्षक बनवास आ एक वर्षक आज्ञात वास स्वीकार करैय पड़लनि जखन बारह वर्षक बनवास कटि लैत छथि। तखन एकवर्षक आज्ञात वास कटबाक लेल विराटनगर जाइत छथि। राजा विराटक ओत अपन नाम आ भेस-भूसा बदलिक रहय लगलनि। मुदा जखन कीचक द्रोपति जकर गुप्त नाम सैरेन्ध्री छलनि। कीचक सैरेन्ध्री सतित्त्वकें कलंकित करबाक चेष्टा कएलक सैरेन्ध्री ई सभ घटना भीमसँ कहलनि। भीम कीचक एहि व्यवहारक करणेँ कीचककें गुप्त रुपे मृत्यु दण्ड देलनि। " कीचकवधक घटनासँ चारु भर आतंक व्याप्त होइछ उत्तराक जिज्ञासा दासी सहचरी द्वारा समाचार सुनौल।"3

एहि खंडकाव्यकमे दु प्रकारक दण्डक चर्चा भेल अछि पहिल पांडव लोकनि जिनका दण्ड स्वरूप वनवास भेलनि दोसर कीचककें कुदण्डता करणेँ मृत्यु दण्ड भेटलनि।

मिथिला भाषा रामायणमे – दण्ड व्यवस्था जखन रावण माता सीताक हरण क लैत अछि। " रघुनाथ अनाथ जका दराकंठ पूरी हम आयल छी सिहंक त्रास महावनमे हरिणीक समान डेरायल छी देवर -दोष कह हस करि अपने अपराधसं कइलि छी चन्द्र-चकोर आदिक सदा हम शोक -समुंद्र समाइलि छी "4

जखन हनुमान जी कतेको राक्षकें संघार करैत लंकामे प्रवेश करैत छथि सीता मातासँ वार्तालाप होइत अछि। " संवादक क्रममे जखन हनुमानजी आसानीसँ रावण राजकँ ध्वस्त क देबाक आत्मविश्वास प्रकट करैत छथि तँ विपदाग्रस्त होइतहुँ सीताकें

आसानी सँ हनुमानक बात स्वीकार करैत आ ताहिसँ प्रसन्न होइत हमरा लोकनिक नहि देखैत छी। जखन कि साधारण नारी जँ विपदाग्रस्त रहैत छथि।"5

सीता एहनो परिस्थितिमे घबराइ नहि छथि वीरतक सँग रावणकें सामना करैत छथि। सीताजी रावण द्वारा कयल गेल अत्याचार आ दुर्व्यवहार क वर्णन हनुमान सँ कहैत छथि।

" गंजन ताड़न राक्षसीक सहै पड़इछ
एहन विपत्ति परऊ न जनु अनका
हमर विपत्ति देखितहि छी। अपनहुँ
सपनहुँ चैन नहि दिन राति मन काँ।
जनु मन राखथु अपराध किछु
निवेदन कय देब धारणी-धरण काँ।"6

सीता अपन दुःखक दिनचर्या हनुमान जी सँ कहैत छथि। रावण आ राक्षसी अत्याचार क भयभीत करबाक प्रयास करैत अछि। तकर वर्णन हनुमान लग कहैत छथि।

जखन रावण द्वरा सीताक हरण क लेल जाइत अछि। एहि पापक दण्ड समस्त लंकावासी कें भोगय परैत अछि। रावण द्वारा सीतापर कयल गेल अत्याचारक बदलामे राम ओकरा कुलक नाश कय दैत छथि।

ओना तँ एहि रामायण मे अनेको दण्डक चर्चा भेल अछि। एहिमे एकटा निर्दोषो व्यक्तिकँ दण्ड भेटि जयबाक चर्चा भेल अछि। सीताकँ रावण सँग लांछन लगाओल जाइत अछि दण्ड स्वरूप सीताकँ वनवास भेटि जाइत अछि। बिना कोनो अपराधेक दण्ड भोगैत छथि। आ अंतमे जखन हुनकर सहन-शक्ति समाप्त भए जाइत अछि तखन सीता धरतीमे समा जाइत छथि।

ई 'कन्यादान' हरिमोहन झाक सभसँ चर्चित आ लोकप्रिय उपन्यास थीक। जे 1933 ई ·मे प्रकाशित भेल अछि। एहि उपन्यासमक नायिका बुचि दाइकँ दण्ड भेटैत अछि।

बुचिदाई पढल-लिखल नहि रहैत छथि , जाहि करणेँ मिस्टर सी ·सी ·मिश्र जे बुचि दाइकँ पति रहैत छथि से हुनका छोड़िक चतुर्थीक रातिमे भागि जाइत छथि।

"एकर कथावस्तु संक्षिप्त अछि चंडी चरण मिश्र(प्रशिद्ध सी· सी·मिश्र)अंग्रेजी शिक्षामे ततबा रमि गेल छथि जे हुनका अपन समस्त संस्कार- संस्कृति सामाजिक रहन- सहन चलि चलन उकरु लगए लगैत छनि किन्तु हुनक विवाह भए जाइत छनि मिथिलाक एक आशिकक्षित कन्या बुच्ची दाइसँ दुनुक संस्कारमे आकाश-पतालक अंतर अछि फल ई होइत अछि। जे सी· सी·मिश्र चतुर्थिक रातिएमे पड़ा जाइत छथि।"7

एहि समस्याक समाधानमे लेखक द्विरागमन उपन्यास लिखने छथि जकर प्रकाशन दस बर्षक बाद भेल अछि। 1943 ई· मे एहि उपन्यासमे बुच्ची दाइ संघर्ष कए शिक्षा प्राप्त कएलाक बाद मॉडल ड्रेसमे मिस्स बिजलीक रुपमे उपस्थिति होइत छथि। आ दुनुक मिलन होइत अछि। "जतए माय-बाप बेटाक पढ़ेबाक लेले हजारक -हजार टाका खर्च करैत छथि। ओतही बेटीक बेटीकँ पढ़ेबाक लेल पांच टाकाक सीलेटो नहि देत छथि।"

चनरी कथा संग्रहमे उग्रनारायण मिश्र कनक एकटा मार्मिक घटनाक वर्णन कयने छथि। चनरी एकटा दलित समाजसँ छलनि। बोइन क अपन जीवन व्यतीत करैत छल। मुदा ओहो लोककें नीक नहि लगैत छल, उच्च कोटिक लोक जकरा खेतमे चनरी बोइन क अपन जीवन बितबैत छल, मुदा कमपियासु लोक चनरीकें रूप गुणकें देखिक ओकरा अपन बसमे करबाक लेल चनरीक जीवन बतसँ- बतर क देलक। मुदा चनरी अपन सतित्वक रक्षा लेल कठीनसँ कठीन परिश्रम क अपन जीवन वितवेत छथि। लेकिन चनरीकें केयो बसमे नहि क सकलाह। करण ओ एकटा नारी शक्तिक प्रकाष्टा छनि। ओ कखणो एहन बाट पर नहि चलैत छल, जाहिसँ ओकर मान सम्मानकें ठेस पहुचे मुदा समाजक लोक ओकरा तोरबाक लेल सभ तरहक प्रयास करैत छल लेकिन ओ नहि झुकलाह पंचमे समाजक लोक चनरी आ ओकर परिवारकें जुम्मन मियाक सँग लांछन लगओलक जकरा चनरी भाय मानेत छल। एकदिन चनरी जखन काज क घर अबैत छल। तँ ओकरा सँग जबरदस्ती करबाक प्रयास कयल गेल तखन चनरी क सहन शक्ति खत्म भए गेल आ हाथमे हथियार ल माँकालीक स्वरूप ओकर गर्दन काइटदैत अछि।“कंचन खवासके विश्वास छलै ओ आइ चनरीकें जेना तेना मना लेत। परन्तु चनरीक कलिका रूप देखि ओ सन्न रहि गेल होस -हवास उड़ी गेलै चनरी क आगू ओकर बकार फुटबे नै करै। घीघिआइत -घीघिआइत बाजल चनरी हल्ला नहि कर चनरी। जे केलौ से तो पौलहूँ। आखिक पट्टी खोलि देलै तो। माफी मगैत छिऔ। अखिमे नोर छलछला एलै पौरुष न त छल स्त्रीत्वक।”8

चनरी माफ नहि कयलनि आ कहलनि नहि पापी आब नहि तोरा छोड़बउ बहुत सहलहूँ तोहर अत्याचार आब नहि ओकर सर धरसँ अलग कए देलक।

चनरीकँ नहि तँ कोनो कानून आ नहि कोनो समाज न्याय कयलनि। तखन ओ अपने हाथसँ हथियार उठा ओहि राक्षासकँ दण्ड दलनि।

कृष्ण चरित्रः-महाकाव्य बारह सर्गमे विभाजित अछि। तंत्रनाथ झा द्वारा रचित एहि महाकाव्यमे कंस द्वारा कयल गेल अनुचित कार्य आ अत्याचारक दण्ड देबाक लेल भगवान विष्णु कृष्णक रुपमे अवतार लेत छथि आ कंसकँ वधक समस्त जगतपर उपकार करैत छथि आ सँग अपन माँ देवकीकें कारागारसँ बाहर निकाल स्वतंत्रता प्रदान करैत छथि सँग समस्त जगतक कल्याण करैत छथि। एहि महाकाव्यमे वीर रस, श्रृंगार रस, वात्सल आ करुण रस आदि रसक प्रचूर मात्रामे प्रयोग भेल अछि।

चाणक्य महाकाव्यः-दीनानाथ पाठक बन्धु द्वारा वीरचित ऐतिहासिक महाकाव्य थीक। जे एग्यारह सर्गमे विभाजित अछि। चाणक्यक जन्म मिथिलामक पावन भूमि पर भेल छलनि , चाणक्य एकटा आदर्श गुरु आ राष्ट्र सेवीक रुपमे जानल जाइत अछि। जखन चाणक्य अपन राष्ट्रपर मडरायत खतराकें देखैत छथि तँ ओतुका राजा घनान्दकें सचेत रहबाक लेल कहैत छथि। राजा अहंकारमे आबि चाणक्यकें अपमान क दैत छथि।

“बाहर एक दुष्टक शिखा खीच
गौरव पायी केर दिअ पीचि।
झरि जाय नीच केर बढ़ल शान
किछु राज शक्तिक केर होइक ज्ञान॥”9

चाणक्य क्रोधीत भ प्रतिज्ञा करैत छथि ,जे हम एहि नंदवंशक नाश क एहि राजकें अहंकार चूर -चूर करब। क्रोधअग्निमे जरैत चंद्रगुप्त मौर्यकें घनांदक प्रति क्रोधीत देखि चाणक्य चन्द्रगुप्तकें शिक्षा -दिक्षा देनाइ आरम्भ कयलनि। तक्षशिलामे आबि चाणक्य चन्द्रगुप्तकें शास्त्र आ शस्त्र विद्याकें ज्ञान देबए लगलनि। सैन्य शक्तिक सँग चन्द्रगुप्त मौर्य नन्दवंशपर आक्रमण कएलनि। ओहि युद्धमे चंद्र गुप्त मौर्य विजय होइत छथि आ अपन गुरु चाणक्यक अपमानक बदला लैत छथि। एहि तरहे घनानंदकें चाणक्यक सँग कयल गेल दुर्व्यवहारक करणेँ दण्ड स्वरूप नंदवंशक नाश क दैत छथि। चन्द्रगुप्त मौर्यकें ओतुका राजा बनाओल जाइत अछि।

सिंदूर ऑपरेशन:- 22अप्रैलकें पहलगाममे आतंकी आक्रमण भेल छल। जहिमे प्राय: 26 लोक मारल गेल छल। जहिमे निर्दोष आ यात्री लोकनि सभ छल। जकर मुहतोड़ जवाब देबाक लेल वर्तमानक प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी सिंदूर ऑपरेशन 7 मई सँ चलौलनि जहिमे भारतीय सशस्त्र बल सँग पाकिस्तानमे घुसिक आतंकीकें दण्ड देलनि जहिमे कतेको आतंकी मारल गेल सगहि अनगिणित आतंकी ठीकना कँ बमसँ उराओल गेल जाहिसँ पाकिस्तानी सरकारकें भारी मात्रामे नुकसान पहुचाओल गेल। पाकिस्तान भारतीय सैनि गतिविधि रोकबाक लेल भारतसँ सम्पर्क क युद्ध विराम करबाक निवेदन कयलनि। आ अंतः युद्ध विरामक सहमति भेल।

निष्कर्ष

और बहुतरास पोथी सभमे दण्ड व्यवस्थाक चर्चा भेल अछि चाहे महाकाव्य हो कि खंडकाव्य आ कि कथा, उपन्यास प्राय: सभ विद्यामे भेटेत अछि जहिमे सँ किछु पोथीक चर्चा अपन आलेखमे केलहुँ अछि। पतन, उत्तरा, मिथिला भाषा रामायण, चनरी,चाणक्य, कन्यादान अखन हाल - फिलहालमे भारत सरकार द्वारा चलाओल गेल सिंदूर ऑपरेशन पहलगाममे आतंकी हमला भेल छल जहिमे निर्दोष महिलाक मंगक सेनूर छीनने छल तकरे न्याय देबाक लेल सिंदूर ऑपरेशन चलाओल गेल छल जे सफल रहलनि।

संदर्भ सूची:-

1. गूगल, इंटरनेट
2. व्यास, उपेन्द्र नाथ झा 'पतन' श्री ब्रजेन्द कुमार झा श्री भवन, बोरिड़ रोड, पटना 1969 भूमिका पृष्ठ-2
3. झा. सुरेन्द्र सुमन 'उत्तरा' मैथिली अकादमी पटना 1981 परिशिष्ट -5
4. झा.भीमनाथ 'परिचयिका' भवानी प्रकाशन, पटना1985 पृष्ठ-27
5. झा. डॉ. रमन कुमार'सफलता सोपान 'शेखर प्रकाशन, पटना 2018 पृष्ठ 124
6. झा. डॉ. रमन कुमार'सफलता सोपान 'शेखर प्रकाशन, पटना 2018 पृष्ठ 124
7. झा.भीमनाथ 'परिचयिका' भवानी प्रकाशन, पटना1985 पृष्ठ-93
8. मिश्र.उग्रनारायण कनक 'चनरी' 1999श्रीमती रामदेवी मिश्र मकरन्दा, मनीगाछीदरभंगा पृष्ठ-41
9. पाठक, दीनानाथ 'बन्धु'चाणक्य मैथिली ग्रंथमाला दरभंगा 1985 पृष्ठ- 22